RESEARCH EXPRESSION ISSN 2456-3455 Vol. II, Issue 2 and 3, March and September 2017

भारतीय समाज पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव

हेमलता बोरकर वासनिक*

समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छग).

शोध सारांश

समकालीन समाज पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व के लगभग सभी देशों पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। भारत में 19वीं सदी के आसपास उद्योगों का विस्तार तीव्र गति से हुआ, प्रारंभ में औद्योगिकीकरण ने मानव समाज को रोजगार के साथ अनेक भौतिक संसाधन उपलब्ध कराकर उसके जीवन में कई क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। औद्योगिकीकरण ने लोगों के लिए नौकरी एवं आर्थिक सुविधा का विस्तार किया। औद्योगिकीकरण का जहाँ समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा वहीं नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई देने लगा है। 21वीं शताब्दी के आसपास लोगों को औद्योगिकीकरण के कई दुष्परिणाम दिखाई देने लगे, जैसे रोजगार मिलने से लोग अपने मूल व्यवसाय से अलग हो गए, पारिवारिक अलगाव, पारिवारिक विघटन, आवास, स्वास्थ्य की समस्या में वृद्धि हो रही है। इस शोध अध्ययन में औद्योगिकीकरण के समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोधपत्र प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है। अध्ययन हेतु रायपुर नगर के सिलतरा औद्योगिक क्षेत्र के कुल 2387 परिवार में से (5 प्रतिशत निदर्श के द्वारा) 120 परिवार का चयन दैव निदर्शन की लाटरी पद्धति के माध्यम से किया गया है।

शब्द कुंजी : उद्योग, समाज, शिक्षा, स्वास्थ्य, कार्य व रहन–सहन।

प्रस्तावना

समकालीन समाज में प्रदूषण की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। विश्व के प्रायः सभी देशों में औद्योगिक विकास तीव्र गति से हो रहा है, जिसमें भारत देश भी अछूता नहीं रहा है। भारत में 19वीं शताब्दी से औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अनेक उद्योगों की स्थापना बड़े पैमाने पर होने लगी, जिसके परिणामस्वरूप औद्योगिक प्रदूषण होने लगा है। औद्योगिक विकास की दौड़ में शामिल विश्व के सभी देश प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण की संकटपूर्ण स्थिति से गुजर रहे हैं। औद्योगिकीकरण का जहाँ समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा वहीं नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई देने लगा है। 21वीं शताब्दी के आसपास लोगों को औद्योगिकीकरण के कई दुष्परिणाम दिखाई देने लगे हैं, जैसे रोजगार मिलने से लोग अपने मूल व्यवसाय से अलग हो गए, पारिवारिक अलगाव, पारिवारिक विघटन, आवास, स्वास्थ्य की समस्या में वृद्धि हो रही है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से औद्योगिक क्षेत्रों के समीप निवासरत लोगों की समस्याओं को ज्ञात कर इन क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जनसमूह व शासन का ध्यान केन्द्रित करना है, ताकि इन समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव दिये जा सकें।

शोध से संबंधित साहित्य एवं उनका पुनरावलोकन

बर्गेस एवं लॉक (1945) ने अपने अध्ययन में पाया कि औद्योगिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार एकाकी परिवार में परिवर्तित हुआ है। नव दंपत्ति यह समझने लगे हैं कि औद्यौगिक जीवनशैली से उनकी जरूरतें आसानी से पूरी हो जाती हैं, जबकि दो या तीन पीढ़ी के परिवार के सदस्यों के एक ही छत के नीचे रहने से वे अपनी अनिवार्य जरूरतें आसानी से पूरी नहीं कर पाते हैं।[1] पारसंस (1956) ने अपने अध्ययन में पाया कि औद्योगिकीकरण के पूर्व परिवार को आर्थिक उत्पादन की इकाई कहा जाता था क्योंकि पूर्व में घर के कार्य एवं घर का बंटवारा नहीं हुआ करता था, परिवार के सदस्य एक ही छत के नीचे रहते थे। औद्योगिकीकरण के पश्चात् परिवार के कार्य एवं घर का बंटवारा होना प्रारंभ हो गया।[2] कपाड़िया (1958) का अध्ययन पारिवारिक संरचना, विवाह एवं नातेदारी व्यवस्था पर केंद्रित है। औद्योगिकीकरण से न केवल पारिवारिक संरचना में बदलाव आया है अपितु नातेदारी व्यवस्था में भी प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव नगरीय एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में पड़ा है। माधव सदाशिव सप्रे (1956)[3] ने अपने अध्ययन The Impact of Industrialization and Urbanization on the Agrawal Family in Delhi में पाया कि औद्योगिकीकरण ने प्राथमिक संबंधों में दूरियाँ बढ़ा दी है, परिवार के सदस्यों में हम की भावना कम हो रही है, द्वितीय और तृतीयक संबंधों में वृद्धि हो रही है, संयुक्त परिवार की महत्ता कम हो रही है। राय (2010)[4]

*Corresponding Author: Email: hemlataborkar@gmail.com • Mobile No. 09424213752

ने अपने अध्ययन में पाया कि औद्योगिकीकरण से न केवल पारिवारिक संरचना में बदलाव आया है अपितु नातेदारी व्यवस्था में भी प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव नगरीय एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में पड़ा है। कपूर (2013)[5] ने देखा कि बहुत बड़ी संख्या में जनजाति श्रमिक राउरकेला की ओर प्रवास कर रहे हैं, औद्योगिकीकरण के कारण इनके जीवन जीने का परंपरागत स्त्रोत सामान्यतः खत्म हो रहा है। वे अब दैनिक मजदूरी, कुली, रिक्शा चलाने का काम करके अपनी जीविकोपार्जन करने लगे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध अध्ययन में औद्योगिकीकरण के समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है।

शोध प्ररचना : प्रस्तुत शोध पत्र विवरणात्मक विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है। इस शोध अध्ययन में पारसंस के संरचनात्मक प्रकार्यवाद के सिद्धांत को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन पद्धति : प्रस्तुत अध्ययन पद्धति को चार भागों में विभाजित किया गया है–

(अ) अध्ययन क्षेत्र का परिचय

छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर जिले के धरसींवा विकासखंड के अन्तर्गत "सिलतरा" औद्योगिक क्षेत्र, रायपुर से लगभग 15 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। रायपुर राजनीति एवं प्रशासनिक गतिविधियों का केन्द्र तो है ही, साथ ही वह "औद्योगिक क्षेत्र" भी है जहां अनेक लघु एवं वृहद् आकार के उद्योग स्थापित हैं, जिसमें उरला के बाद सिलतरा प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है। सिलतरा 10000 की आबादी वाला एक जनपद नगर पंचायत है जिसमें कुल 2387 परिवार हैं।

(ब) उत्तरदाताओं का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन "भारतीय समाज पर औद्योगिकीकरण का प्रभावः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन सिलतरा औद्योगिक क्षेत्र के विशेष संदर्भ में" किया गया है। अध्ययन विषय की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सिलतरा अध्ययन क्षेत्र के कुल 2387 परिवार में से 120 उत्तरदाताओं का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया हैं।

(स) तथ्यों के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण एवं प्रविधि

प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार–अनुसूची उपकरण का उपयोग किया गया है तथा असहभागी अवलोकन प्रविधि के माध्यम से भी औपचारिक एवं अनौपचारिक वार्तालाप के द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

औद्योगिकीकरण का समाज पर सकारात्मक प्रभाव

तालिका क्रमांक 1 उत्तरदाताओं की शिक्षा

क्र.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	21	17.5
2.	प्राथमिक	14	11.6
3.	माध्यमिक	22	18.3
4.	हाईस्कूल	27	22.5
5.	हायर सेकेण्डरी	28	23.3
6.	स्नातक	08	6.6
	योग	120	100

तालिका क्रमांक 1.1 उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्यों की शिक्षा

क्र.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	22	4.6
2.	प्राथमिक	63	13.3
3.	माध्यमिक	85	17.9
4.	हाई स्कूल	95	20.0
5.	हायर सेकेण्डरी	87	18.4

6.	स्नातक	78	16.5
7.	स्नातकोत्तर	43	9.3
	योग	473	100

उपरोक्त तालिका 1 व तालिका 1.1 से यह स्पष्ट है कि अध्ययनगत समूह के मात्र 17.5 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर हैं, अतः स्पष्ट है कि औद्योगिकीकरण से निरक्षरों की संख्या में कमी आ रही है। समाज में शिक्षितों की संख्यों बढ़ने से सामाजिक समानता में वृद्धि हो रही है।

तालिका 2 उत्तरदाताओं का व्यवसाय

क	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	मजदूरी	46	38.3
2.	शासकीय नौकरी	36	30.0
3.	निजी व्यवसाय	04	3.3
4.	अशासकीय नौकरी	06	5.0
5.	कृषि	28	23.4
	योग	120	100

तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप समाज में शासकीय एवं अशासकीय नौकरी तथा निजी व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि औद्योगिक क्षेत्र में उन व्यक्तियों की अधिकता होती है जो मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते हैं। यह अध्ययन राय के अध्ययन की पुष्टि करता है। व्यवसाय में परिवर्तन से जीवनशैली में परिवर्तन हो रहा है।

तालिका 2.2 उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय

क्र.	मासिक आय (रुपयो में)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	10 हजार रु. तक	78	65
2.	10 से 20 हजार रु.	18	15
3.	20 से 30 हजार रु.	20	16.5
4.	30 हजार से अधिक	09	7.5
	योग	570	100

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 10 हजार रु. तक तथा 16.5 प्रतिशत परिवार की मासिक आय 20 से 30 हजार रु. तथा 15 प्रतिशत परिवार की मासिक आय 10 से 20 हजार रु. है एवं 7.5 प्रतिशत परिवार की मासिक आय 30 हजार रु. से अधिक है। अतः औद्योगिकीकरण से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है।

औद्योगिकीकरण का समाज पर नकारात्मक प्रभाव

तालिका 3 उत्तरदाताओं के परिवार का आकार

क्र	परिवार का आकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	लघु आकार (1–3 सदस्य)	53	44.2
2.	मध्यम आकार (3–6 सदस्य)	45	37.5
3.	वृहद् आकार (6–9 सदस्य)	16	13.3
4.	अतिवृहद् आकार (9 सदस्य)	06	5.0
	योग	120	100

तालिका 3 से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि वर्तमान में लघु आकार (1–3 सदस्य) तथा मध्यम आकार (3–6 सदस्य) वाले परिवारों की संख्यों में वृद्धि हो रही है, अर्थात् औद्योगिकीकरण का पारिवारिक संरचना पर प्रभाव पड़ रहा है। यह अध्ययन कपाड़िया एवं गोरे के अध्ययन की पुष्टि करता है।

तालिका 4 उत्तरदाताओं के परिवार का प्रकार

क्र.	परिवार का प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	एकाकी	67	55.8
2.	संयुक्त	53	44.2
	योग	120	100

उत्तरदाताओं के परिवार के प्रकार से स्पष्ट है कि अध्ययनगत समूह के आधे से अधिक (55.8 प्रतिशत) उत्तरदाता एकाकी परिवार से हैं । औद्योगिकीकरण से संयुक्त परिवार प्रणाली का अस्तित्व कम होता जा रहा है।

तालिका 5 उद्योग से उत्पन्न प्रदूषण से परेशानी होना

क्र.	प्रदूषण से परेशानी होना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	51	42.
2.	नहीं	69	57.5
	योग	120	100

उद्योग से उत्पन्न प्रदूषण से परेशानी होने के संबंध में अध्ययनगत समूह के लगभग आधे उत्तरदाताओं ने परेशानी होना बतलाया है ।

यदि हाँ तो प्रदूषण का स्वरूप

तालिका 5.1 उद्योग से उत्पन्न प्रदूषण का स्वरूप

क्र.	प्रदूषण से परेशानी होना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	ध्वनि	13	25.4
2.	वायु	19	37.2
3.	जल	10	19.7
4.	थल	08	15.7
	योग	51	100

उद्योग से उत्पन्न प्रदूषण का स्वरूप ज्ञात करने पर इस तथ्य की पुष्टि होती है कि वर्तमान में उत्तरदाताओं को प्रदूषण के सभी स्वरूपों का सामना करना पड़ रहा है किन्तु वायु एवं ध्वनि प्रदूषण का प्रतिशत जल एवं थल प्रदूषण की तुलना में अधिक है।

Works Cited

1. Burges, E. and Locke, H.J. (1945); The Family; From Institution to Companionship, The American Book Company, New York, pp. 480-487.
2. Parsons,Tolcot (1956); Family, Socialization, and Interaction Process, Routledge and Kegan Paul, Press, London, pp. 56-87.
3. Kapadia, K.M. (1961); The Impact of Industrialization and Urbanization on the Agrawal Family in Delhi, Unpublished Thesis, Columbia University Colpmbia, pp. 212-230.
4. Roy, P.K. (2010); Socio-economic Impact of Industrialization on Indian family: A case Study in Ranchi, India, A Journal of Social Anthropology and Comparative Sociology, Vol. 4 Issue 1, pp. 97-109.
5. Kapoor, Tushar (2013); The Impact of Industrialization on the Tribal Livelihood: A Case Study of Rourkela, Unpublished Project Work, National Institute of Rourkela, pp. 1-24.